इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं । संपादक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता ।

पुस्तक	:	मलयालम : महिला मानस की कहानियाँ
संपादक	:	डॉ. आरसु
सहसंपादक	:	डॉ. षीना ईप्पन
आई.एस.बी.एन.	:	978-93-95107-39-6
संस्करण	:	प्रथम, सन् 2023
©	:	संपादक
मूल्य	:	350.00 मात्र
प्रकाशक	:	अमन प्रकाशन
	:	104-ए /80 सी, रामबाग, कानपुर-208 012 (उ-प्र-)
मो-	:	09839218516, 9044344050
फोन	:	0512-3590496 (ऑफिस)
शब्द सज्जा	:	अमन ग्राफिक्स, रामबाग, कानपुर
मुद्रक	:	आर. बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

MALYALAM : MAHILA MANAS KI KAHANIYAN

Edited by : **Dr. Arsu, Dr. Sheena Eappen**

Price : Three Hundred Fifty Only

मलयालम

की

प्रारम्भिक कथा लेखिका

स्वर्गीय श्रीमती ललितांबिका अंतर्जनम के प्रति

सादर

समर्पित

पर हर कहीं नारी की नियति बिलकुल समान है वाली उक्ति को रेखांकित करने में ये कहानियाँ सक्षम निकली है। ब्राह्मण, ईसाई, इस्लाम, आदिवासी सभी वर्ग, धर्म, जाति की स्त्रियों की समस्याएँ लेखिकाओं की कलम से निसृत होने लगीं, फलस्वरूप समाज में अनिश्चित बदलाव भी नजर आने लगे।

'मलयालम महिला मानस की कहानियाँ' भाषा समन्वय वेदी का एक साझा प्रयास है। अनुवाद के माध्यम से भारतीय भाषाओं को आपस में मिलाने का काम भाषा समन्वय वेदी की ओर से अध्यक्ष सम्माननीय डॉ. आरसू जी के नेतृत्व में सालों से जारी है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक फैले हमारे देश की भाषाई विविधताओं में एकता लाने का प्रयास वेदी ने अपने कंधों पर ले लिया है। 'मलयालम महिला मानस की कहानियाँ' नामक यह चयनिका इसका ज्वलंत उदाहरण है। इन तमाम कहानियों से गुजरते वक्त मलयालम की महिला कहानियों का एक ग्राफ हमें मिलेगा। नारी जागरण के लिए आवाज उठाने वाली, पुरुष वर्चस्व के विरुद्ध लड़ने वाली प्रारंभ कालीन लेखिकाओं को निकट से जानने का जो मौका प्राप्त हुआ, इसको मैं परम सौभाग्य मानती हूँ' डॉ० आरसु जी मेरे आदरणीय गुरुवर हैं। आप ने ही मुझे यह दायित्व सौंपा था। आपके प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

दक्षिण भारत की अन्य भाषाओं से भी इस प्रकार लेखिकाओं की चयनिकाएं प्रकाशित होने से हिन्दी पाठकों को भारतीय महिला लेखन की एक रूपरेखा मिल जाएगी। " हिन्दी प्रदेश के पाठक खुले मन से मलयालम चयनिका को स्वीकार करेंगे, इस आशा के साथ।

अनुक्रम

अनुवादक सांस्कृतिक एकता के संतरी (संपादकीय) / डॉ. आरसु- 04
सह संपादक की कलम से / डॉ. षीना ईप्पन- 07
सत्य का विनम्र स्वर/ललितांबिका अन्तर्जनम से बातचीत (टी.एन. जयचंद्रन)-11
साहित्य सार्वजनिक दावत नहीं /माधवीकुट्टी से बातचीत (शिबु षणमुखम)-21
विद्रोही दुर्गा / ललितांबिका अन्तर्जनम (अनु- डॉ. पी.एम. शांता)- 29
आत्महत्या / राजलक्ष्मी (अनु डॉ. एन. गिरिजा)- 40
माँ / माधवीकुट्टी (अनु- डॉ. षीना ईप्पन)- 44
ऑनमेरी की शादी / सारा जॉसफ (अनु- अनिता सी.)- 48
बाँसुरी / पी.वत्सला (अनु- डॉ. सुप्रिया- पी.)- 53
नापाक जख्म / ग्रेसी (अनु- डॉ. राधामणी पी.के.)- 57
विदाई /सारा थॉमस (अनु- राजेश.के.)- 61
तोहफा / पी.आर. श्यामला (अनु- डॉ. सूर्या बोस)- 67
अनामिका / एम.डी. राधिका (अनु- डॉ.ओ. वासवन)- 75
भलाई-बुराई / के.बी. श्रीदेवी (अनु- षीवा सी.पी.)- 79
हम जिंदगियां सेकने वाले / (खदीजा मुंताज, अनु- बीना.के. नायर) 85
शिवेन सहनर्तनम् / अषिता (अनु- डॉ. जे. अंबिका देवी)- 94
यादों की नस / (के.आर. मीरा अनु- डॉ. अनीष सिरियक)- 98
काँच की चूड़ियाँ / प्रिया ए.एस. (अनु- डॉ- प्रमोद कोवप्रत)- 105
बच्चा जो रोया नहीं / के.पी. सुधीरा (अनु- डॉ. प्रीता एम.के.)- 110
लेखिका के मरणोपरान्त / रेखा.के. (अनु- डॉ. आरसु)- 115
पत्नी का पागलपन /बी. एम. सुहरा (अनु - डॉ. आरसु- 122
पहचान / सितारा. एस. (अनु- डॉ. मेघा. ए.आर.)- 126
फिर बूँदा-बाँदी / आशा.के. (अनु- डॉ. रंजित. एम.)- 131
काली बिल्ली/ पी.टी. राजलक्ष्मी/अनु- डॉ. आशीवाणी.के उषस्- 134
सागरनुमा आकाश / तनूजा एस भट्टतिरि (अनु- डॉ. मारग्रेट वी.जी.)- 137
अनुवादकों के संपर्क सूत्र- 142

मेकअप लगे राजेंद्र कृष्णन के चेहरे से पसीने की बूंदे टपकने लगीं। भले ही सब कुछ मिट्टी में मिल जाए-मैं और मेरा सूत का कारखाना, मेरी पत्नी की शिकायत, कण्णनकुट्टि के अंतिम साँस लेते वक्त लोगों का ताली बजाना-सब, लेकिन उस अजनबी का हँसी अब भी जारी है-"बेटा कण्णनकुट्टि तुम अब नहीं बचोगे।"

अचानक सपने से जाग उठा तो डिब्बे में बहुत शोर सुनाई पड़ा। एक तमिल लड़की का भाई एक हिंदी फिल्म का गाना गा रहे थे। वे लोग अब हाथ फैलाकर सामने आएंगे उस लड़की के चेहरे पर एक निर्वेद भाव भी होगा। ट्रेन अनेक जगहों को पीछे छोड़ते हुए आगे की ओर बढ़ रही थी। झरोखे से जंग की धूल तथा रेल की गंदगी को लिए हवा भी अंदर आ रही है।

उस हवा से उसे खेत की कीचड़ की बदबू आई।

मूल : आशा. के
अनु. डॉ. रंजित. एम.

फिर बूंदा-बाँदी

उसने पर्दे के पीछे से देखा, नाटक खत्म होते ही सब लोग हॉल से वापस जा रहे थे। अब उसकी जान में जान आई। इतनी देर कैसे गुजरी... सोचा भी नहीं जा सकता। पद के पाठ ही खड़ा देख रहा था कि कोई शोर तो नहीं मचा रहा, एकटक... जिंदगी में पहली बार।

उसे लगा कि आँखें मूंदे जा रही हैं। दो तीन दिनों की नींद बाकी है। सिर दुख रहा है। ठंडे पानी से मुँह धोया... थोड़ी तसल्ली हुई। फिर भी नींद नहीं छूटी।

हॉल लगभग खाली हो चुका था। सभी अभिनेता अपने सामान बाँध रहे थे। मंच के एक ओर से वेणु सर आ रहे थे। उसने आशा के साथ सर के चेहरे की ओर ताका।

"नाटक बहुत अच्छा रहा। इतना मैने नहीं सोचा था। हरी का भविष्य उज्ज्वल होगा।"

सर बोलते जा रहे थे... नाटक की कमियों, कॉलेज में एक नाटक क्लब होने की जरूरत आदि के बारे में। सर ऐसे ही बातूनी ढंग के आदमी हैं। उन बातों से उसे कोई मतलब नहीं है, तो भी वह नापसंदी नहीं दिखाता था। सर से कुछ कहने का साहस नहीं था, उसमें।

वह सोचता था कि इस एक महीने में वह सर के कितना करीब आ गया है। अकेलेपन से दम घुट रहा था तभी सर की यहाँ बदली हुई। तब तक कहने लायक कोई दोस्त उसका नहीं था। वह अपनी निजी जिंदगी में किसी और को दखल देने नहीं देता था।

वापस जाते वक्त सर मुड़कर कहा, "शाम को कमरे में आना, कुछ किताब दे दूंगा।"

उसने हामी भरी। ।सर के दूर निकलने तक वह देखता रहा। धूप उतर रही थी। सब लोग जा चुके थे। कमर का छत से कबूतर शोर मचाते हुए उड़ गए।

उस दिन वह घर देर से पहुंचा। माँ देहली पर खड़ी ताक रही थी। इतनी देर तक कहाँ था? कॉलेज से सीधे घर नहीं आता।

कुछ नहीं कहा। बेटे ने भी उसे गुस्सा दिलाया। आजकल तू घमंडी होता जा रहा है। आज ही मैं तुम्हारे पापा को चिट्ठी लिखूगी।

वहाँ परदेस में वह खून में पसीना एक कर रहे हैं। तुम्हें इसकी कोई परवाह है? बस नाटक खेलते फिरते हो।"

उसे लगा कि अनसुनी करना ही बेहतर है। माँ से भिड़ने से कोई फायदा नहीं। माँ यह नहीं समझेगी। बाहर माँ बड़बड़ा रही थी, और यहाँ वह नींद में डूबा जा रहा था।

सुन्दर सपने से वह जाग उठा। अँधेरा छा गया था। खुली खिड़की से ठंडी हवा चल रही थी।

वह उठ बैठा। अब समय क्या हो गया होगा? सर ने कहा था कि शाम को मिलेंगे। थक गया था। कब सो गया, पता ही नहीं चला। मेज पर ठंडी कॉफी रखी थी, एक चूंट में पी गया। कंघी कर रहा था कि पीछे से माँ के आने की आहट सुनी।

"अब कहाँ जा रहा है?"

"यूँ ही... टहलने।"

लगता है माँ बात समझ गई। वह उसके सिर पर हाथ फेरने लगी।

"कुछ दिनों से मैं कहना चाहती थी, आजकल तुम पढ़ाई में मन नहीं लगा रहे हो। मैं तुम्हारी भलाई के लिए कह रही हूँ। वेणु जी से दोस्ती ठीक नहीं लगती। हमें नहीं चाहिए... बेटा।" माँ की नापसंदी धीरे से बाहर आने लगी।

"मुझे कभी ऐसा नहीं लगा, सर अच्छे आदमी हैं।" उसने माँ का हाथ अपने सिर से छिटक दिया।

माँ की बातें भी... उसने मन ही मन सोचा, "माँ कुछ भी करने नहीं देगी। तंग आ गया हूँ।

पहर की ओर ताक रही थी। आज तक उसका यह भाव बेटे ने नहीं देखा था। उसका मन कह रहा था कि, "आप कह सकती है, कि वह कोई नहीं है।

उसने तुम्हें भड़काया है। इसलिए तू ऐसा..." माँ कुछ सोचती हुई, रुलाई को रोकती हुई खड़ी रही।

"माँ यह तुम्हारी गलतफहमी है। मुझे किसी ने नहीं भड़काया।"

"मुझे पता है। वह तुम्हें साथ लेकर मुझे हटाना चाहता है।" माँ सपने में जैसे फुसफुसाई। वह भर्राए मन से माँ को देखता रहा। उसने माँ से आज तक ऐसा कुछ नहीं कहा था। उसे बहुत दुख महसूस हुआ।

वह खिड़की में अपने आपको संभालकर बाहर की ओर देखता रहा। रात हो रही थी। एक पत्ता भी नहीं हिल रहा था। आसमान में काले बादल छा गए थे।

ऐसे खड़े रहने से कोई फायदा नहीं। अब तक बहुत देर हो चुकी है। दरवाजा खोलते ही माँ ने उसे झकझोर कर पूछा,

"उसने तुमसे क्या कहा? अभी, इसी पल बताओ मुझे। मैंने उसे धोखा दिया? उसने मेरे लिए इतना इंतजार किया।"

एक पल के लिए वह स्थगित हो गया। माँ हाँफ रही थी। उसने देखा, माँ की आँखें भरी हुई थी।

फिर वह बाहर निकला, जैसे खास कुछ नहीं हुआ हो। बाहर बूंदा-बाँदी होने लगी थी।

डॉ. आरसु

पूरा नाम : आर. सुरेन्द्रन

जन्म : 1950, कालिकट (केरल)।

शिक्षा : एम.ए., पीएच.डी. हिंदी कालिकट विश्वविद्यालय, केरल से।

शोध : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास पर विदेशी संस्कृति का प्रभाव।

अध्यापन : पुरस्कृत साहित्यकार 1977-1984, सरकारी कॉलेज, कॉलिकट, 1995-2011, कॉलिकट विश्वविद्यालय, 1998 में प्रोफेसर, 2008-2010 आचार्य और अध्यक्ष, 2012-2015 तक केन्द्रीय विश्वविद्यालय केरल में।

साहित्य सेवा : 70 कृतियाँ (हिन्दी और मलयालम), 10 हिन्दी पत्रिकाओं के मलयालम विशेषांक का अतिथि संपादक, पत्रिकाओं में 400 लेख प्रकाशित, भारत के 30 विश्वविद्यालयों में व्याख्यान, जापान और आस्ट्रेलिया के विश्वविद्यालयों में व्याख्यान।

प्रमुख हिन्दी कृतियाँ : अनुवाद : कुछ नमूने कुछ पैमाने आधुनिक वातायन से, साहित्यानुवाद : संवाद और संवेदना, अनुवाद : अनुभव और अवदान, एक अनुवादक का अलबम, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास, हिंदी साहित्य : सरोकार और साक्षात्कार, हिंदी का मैदान विशाल है, मलयालम के महान कथाकार, मलयालम साहित्य : परख और पहचान, केरल : कला, साहित्य और संस्कृति, भारतीय साहित्य : आशा और आस्था, भारतीय भाषाओं के पुरस्कृत साहित्यकार, भारतीय साहित्य का भाव संसार, महात्मा गाँधी - साहित्यकारों की दृष्टि में, हिंदी साहित्य को दक्षिण भारत की दक्षिणा।

सम्मान-पुरस्कार : भारत सरकार, उत्तर प्रदेश, बिहार आदि प्रदेशों की अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं के राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित। जापान के चार विश्व विद्यालयों में भारतीय साहित्य पर व्याख्यान (2002), विश्वभारती हिंदी पुरस्कार।

संप्रति : विजिटिंग प्रोफेसर, गांधी अध्ययन केंद्र, कालिकट विश्वविद्यालय, केरल।

संपर्क : साकेत, पोस्ट-चेलेम्ब्रा, जिला - मलप्पुरम, केरल - 673634।

दूरभाष : 0494-2402021, 9847762021

ईमेल : arsusaketh@yahoo.com

अप्र

अमन प्रकाशन

104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.)

मो.नं. : 8090453647, 9839218516

फोन : 0512-3590496

ईमेल : amanprakashanknp@gmail.com

वेबसाइट : www.amanprakashan.com

₹ 350/-

ISBN : 978-93-95107-39-6

कहानी संग्रह

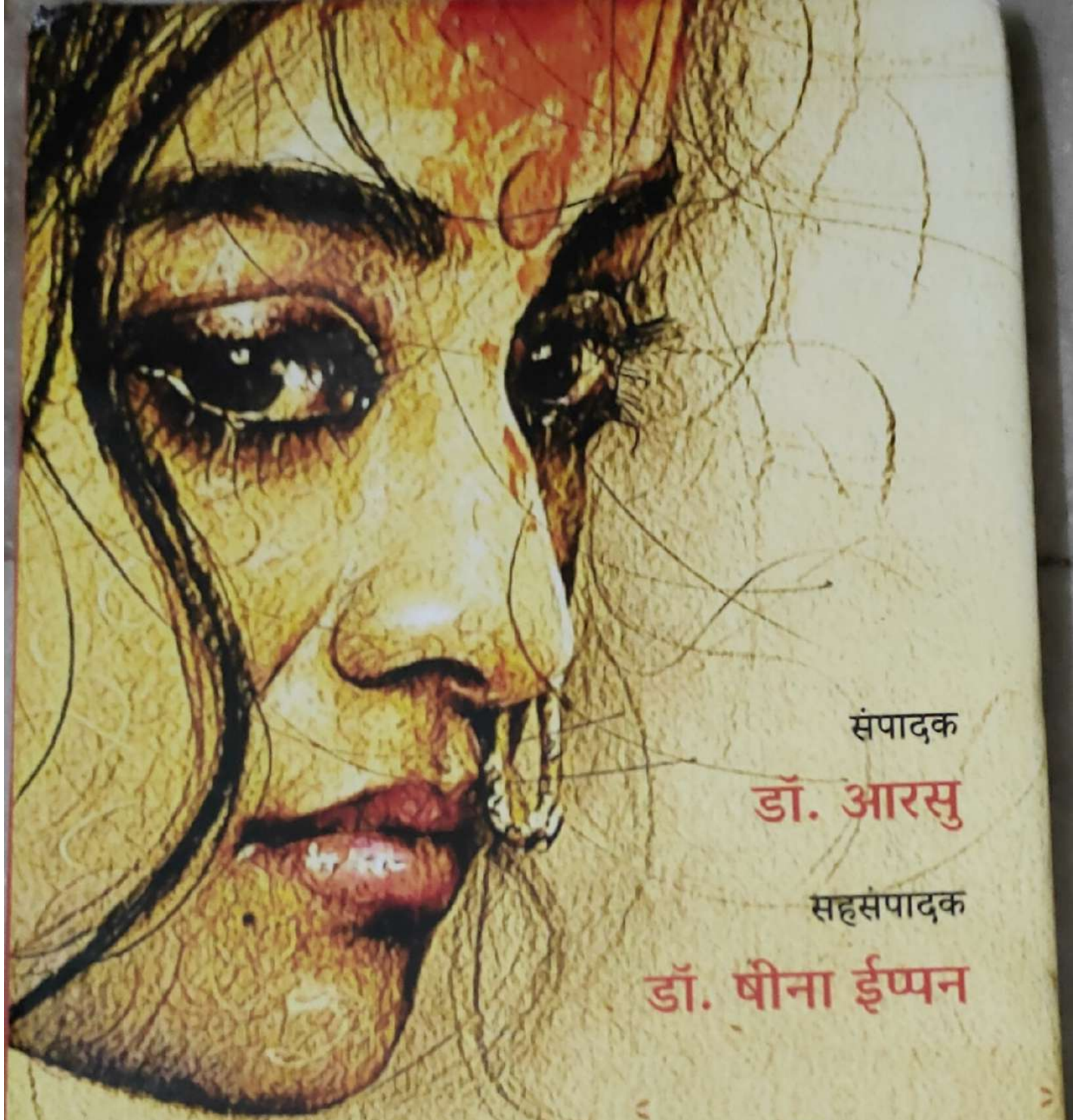

संपादक

डॉ. आरसु

सहसंपादक

डॉ. षीना ईप्पन

मलयालम : महिला मानस की कहानियाँ